Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(1108)

UG (CBCS) RUSA Vth Semester (Old) Examination

1439

SANSKRIT

(Shiksha, Natak, Natya Tatha Vyakaran)

(Major/Minor)

BASKT–0510

Time : 3 Hours] **[Maximum Marks : 70**

भाग–क

1. (क) निम्नांकितानां प्रश्नानामुत्तराण्यतीव संक्षेपेण देयानि–

(i) संस्कृत व्याकरणस्य मुनि त्रयं लिखत।

(ii) कति वेदाङ्गानि ?

(iii) पाणिनिमते स्वरा: कति सन्ति ?

(iv) 'चारुदत्त' नाटके कति अंका: सन्ति ?

(v) राजश्याल: क: आसीत् ?

(vi) काव्य दीपिकाया: रचयिता क: अस्ति ?

(vii) हन् धातो: लटि प्रथम पुरुषैक वचने किं रूपम् ?

(viii) शीङ् धातोः लटि प्रथम पुरुष बहुवचने किं रूपम् ?

(ix) पाश्चात्यः इत्यत्र प्रकृति प्रत्यय विभागं कुरूत।

(x) आस्तिकः इत्यत्र प्रकृति प्रत्यय विभागं कुरूत।

10×1=10

(ख) निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए–

(i) पाणिनीय शिक्षानुसार पाठकों के गुणों की चर्चा कीजिए।

(ii) चारुदत्त के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

(iii) अस् धातु के रूप लङ् लकार में लिखिए।

(iv) सुखं हि दुःखान्यनुभूयशोभते–सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

(v) निम्नांकित पदों में प्रकृति प्रत्यय विभाग कीजिए–

वैनतेयः, महिमा, अणिमा, अत्र। 5×4=20

भाग-ख

2. (क) पाणिनीय शिक्षानुसार अधम पाठकों की चर्चा कीजिए।

(ख) 'चारुदत्त' नाटक का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

(क) पाणिनीय शिक्षानुसार वेद पुरुष के अंगों का परिचय दीजिए।

(ख) 'चारुदत्त' नाटक के प्रथमांक का सार लिखिए। 5+5=10

भाग-ग

3. निम्नांकित पद्यों का हिन्दी में सरलार्थ कीजिए–

(क) सत्यं न मे धन विनाश गता विचिन्ता

भाग्य क्रमेण हि धनानि पुन भवन्ति।

एतत् तु मां दहति नष्ट धन श्रियो मे

यत् सौहृदानि सुजने शिथिली भवन्ति॥

(ख) लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।

असत्पुरुष सेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥

अथवा

(क) उत्कंठितस्य हृदयानुगता सखीव

संकीर्ण दोष रहिता विषयेषुगोष्ठी।

क्रीडा रसेषु मदन व्यसनेषु कान्ता

स्त्रीणां तु कान्त रतिविघ्नकरी सपत्नी॥

(ख) धिगस्तु खलु द्रारिद्र्यमनिर्वेदं च यौवनम्।

यदिदं दारुणं कर्म निन्दामि च करोमि च॥ 5+5=10

भाग-घ

4. (क) काव्य रचना के प्रयोजनों की चर्चा कीजिए।

(ख) पा धातु के रूप लङ् लकार में लिखिए।

अथवा

(क) कथ्यते काव्यम् इष्टार्थव्यवछिन्नापदावली की व्याख्या कीजिए।

(ख) भा धातु के रूप लृट् लकार में लिखिए। 5+5=10

भाग-ङ

5. निम्नांकित पदों में प्रकृति प्रत्यय विभाग कीजिए–

(क) नैश: पाक्षिक:

आरण्यक: नाविक:

क्रमक: वैतनिक:

मीमांसक: दण्डी

सामाजिक: सुखी

(ख) शीङ् धातु के रूप लृट् लकार में लिखिए।

अथवा

निम्नांकित पदों में प्रकृति प्रत्यय विभाग कीजिए–

(क) पंचक: दाक्षिणात्य: अमुत्र

पुरातनम् आग्नेय: उत्तम

अद्यतनम् आत्रेय

नूतन: गरिमा

(ख) इण् धातु के रूप लट् लकार में लिखिए। 5+5=10